चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम....... हरि भूमि ....

दिनांक 15.12.2020 ...पृष्ठ संख्या.....1.....कॉलम.....2-8.....

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में किसानों के लिए अधिक पैदावार देने वाली गेहूं की किस्म विकसित

अधिकतम पैदावार 91.5 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक

हरिभूमि न्यूज ▸▸ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की मेहनत की बदौलत एक ओर उपलब्धि विश्वविद्यालय ने अपने नाम कर ली है। अब वैज्ञानिकों ने गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म विकसित की है। यह वैज्ञानिकों की मेहनत का ही परिणाम है कि हरियाणा प्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से अन्य प्रदेशों की तुलना में बहुत ही छोटा है जबकि देश के केंद्रीय खाद्यान भंडारण में प्रदेश का कुल भंडारण का 16 प्रतिशत हिस्सा है और फसल उत्पादन में अग्रणी प्रदेशों में है, जो अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। आज हरियाणा प्रदेश गेहूं के प्रति हेक्टेयर उत्पादन क्षमता में देशभर में प्रथम स्थान पर है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के गेहूं अनुभाग

विश्वविद्यालय द्वारा विकसित कृषि एवं किसान कल्याण विभाग की फसल मानक, केंद्रीय उप-समिति द्वारा नई बैठक में अधिसूचित व जारी कर

खास बातें

- हरियाणा प्रदेश गेहूं के प्रति हेक्टेयर उत्पादन क्षमता में देशभर में प्रथम स्थान पर
- अगर विवि की सिफारिशों के अनुसार खाद, डाली जाए तो इसकी औसतन पैदावार 75.8 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हो सकती है

सिफारिश अनुसार बिजाई करने पर होती अधिक पैदावार : डॉ. सहरावत

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके. सहरावत ने बताया कि इस किस्म को अक्टूबर के अंतिम सप्ताह में बिजाई के लिए अनुमोदित किया गया है। अगेती बिजाई करने पर इसकी पैदावार प्रति एकड़ 4 से 8 क्विंटल तक अधिक ली जा सकती है। उन्होंने बताया कि इस किस्म में विश्वविद्यालय द्वारा की गई सिफारिशों के अनुसार बिजाई करके उचित खाद, उर्वरक व पानी दिया जाए तो इसकी औसतन पैदावार 75.8 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हो सकती है और अधिकतम पैदावार 91.5 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक ली जा सकती है। इस किस्म की खास बात यह है कि यह गेहूं की मुख्य बिमारियां पीला रतवा व भूरा रतवा के प्रति रोगरोधी है। इसके अलावा गेहूं के प्रमुख क्षेत्रों में प्रचलित मुख्य बिमारियां जैसे पत्ता अंगमारी, सफेद चुर्णी व पत्तियों की कांगियारी के प्रति भी रोगरोधी है।

इनकी मेहनत लाई रंग

गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के गेहूं अनुभाग के वैज्ञानिक डॉ. ओ.पी. बिश्नोई, डॉ. विक्रम सिंह, डॉ. एसके. सेठी, डॉ. एसएस. दांडा, डॉ. दिव्या फोगाट, डॉ. एमएस. दलाल, डॉ. सोमवीर, डॉ. आईएस. पंवार, डॉ. एके. छाबड़ा, डॉ. योगेंद्र कुमार, डॉ. केडी. सहरावत, डॉ. मुकेश सैनी, डॉ. रमेश कुमार, डॉ. कृष्ण कुमार, डॉ. वाईपीएस. सोलंकी और डॉ. ए.लोकेश्वर रेड्डी के अलावा डॉ. आरएस. बेनीवाल, डॉ. रेनू मुंजाल, डॉ. भगत सिंह, डॉ. नरेश सांगवान, डॉ. आरएस. कंवर, डॉ. प्रियंका, डॉ. राकेश पूनियां, डॉ. मुकेश कुमार, डॉ.निशा कुमारी, डॉ. बबीता व डॉ. हरबिंद्र सिंह का भी विशेष सहयोग रहा। यह किस्म 156 दिन तक पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म में प्रोटीन भी अन्य किस्मों की तुलना में अधिक है।

उत्तर भारत के मैदानी इलाकों के लिए तैयार की नई किस्म

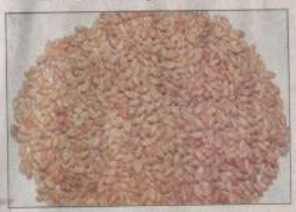

गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के लिए अनुमोदित किया गया है। इन क्षेत्रों में पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (कोटा व उदयपुर क्षेत्र को छोड़कर), पश्चिमी उत्तर प्रदेश (झांसी क्षेत्र को छोड़कर), जम्मू-कश्मीर के कठुआ व जम्मू जिले, हिमाचल प्रदेश के ऊना जिला व पौंटा घाटी और उत्तराखंड का तराई क्षेत्र प्रमुख रूप से शामिल हैं।

अगले वर्ष से होगा बीज उपलब्ध : पादप एवं पौध प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. एके छाबड़ा ने बताया कि रबी के मौसम के लिए सिफारिश की गई इस किस्म का बीज अगले वर्ष किसानों के लिए उपलब्ध करवा दिया जाएगा। यह किस्म किसानों के लिए वरदान साबित होगी।

वैज्ञानिकों की मेहनत काबिलेतारीफ : कुलपति प्रो. समर सिंह ने बताया कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की मेहनत बहुत ही काबिलेतारीफ है, जिनकी बदौलत आज केंद्रीय खाद्यान भंडारण में प्रदेश का मुख्य स्थान है और गेहूं उत्पादन में देशभर में प्रथम स्थान पर है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम....दैनिक जागरण....

दिनांक 15.12.2021 पृष्ठ संख्या....4....कॉलम....2-8....

एचएयू ने विकसित की गेहूं की नई किस्म, अधिकतम पैदावार के साथ मिलेगी स्वादिष्ट चपाती

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के विज्ञानियों ने गेहूं की नई उन्नत किस्म (डब्ल्यूएच 1270) विकसित की है। इसकी विशेषता यह है कि यह पैदावार भी अधिक देगी और इसके आटे की चपातियां भी स्वादिष्ट होंगी। इसे विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के गेहूं अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है।

किस्म को लेकर हाल ही में भारत सरकार के कृषि एवं सहयोग विभाग की फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप समिति ने प्रयोग की स्वीकृति दी दी है। ऐसी ही नई-नई उन्नत किस्मों के कारण हरियाणा गेहूं के प्रति हेक्टेयर उत्पादन क्षमता में देशभर में प्रथम स्थान पर है। कुलपति प्रो. समर सिंह ने विज्ञानियों को इस उपलब्धि पर बधाई दी।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह के साथ गेहूं की उन्नत किस्म विकसित करने वाले विज्ञानियों की टीम के सदस्य • पीआरओ

गेहूं की यह किस्म उत्तर भारत के मैदानी इलाकों के लिए की गई है विकसित

गेहूं की यह किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के लिए अनुमोदित किया गया है। इन क्षेत्रों में पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (कोटा व उदयपुर क्षेत्र को छोड़कर), पूर्वी उत्तर प्रदेश (झांसी क्षेत्र को छोड़कर), जम्मू-कश्मीर के कठुआ व जम्मू जिले, हिमाचल प्रदेश के उना जिला व पांवटा घाटी और उत्तराखंड का तराई क्षेत्र प्रमुख रूप से शामिल हैं।

नियमानुसार करें बिजाई तो मिलेगी अधिक पैदावार

अनुसंधान निदेशक डा. एसके सहरावत ने बताया कि गेहूं की इस किस्म को अक्टूबर के अंतिम सप्ताह में बिजाई के लिए अनुमोदित किया गया है। अगेती बिजाई करने पर इसकी पैदावार प्रति एकड़ 4 से 8 क्विंटल तक अधिक ली जा सकती है। इस किस्म में विश्वविद्यालय द्वारा की गई सिफारिशों के अनुसार बिजाई करके उचित खाद, उर्वरक व पानी दिया जाए तो इसकी औसतन पैदावार 75.8 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हो सकती है और अधिकतम पैदावार 91.5 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक ली जा सकती है।

गेहूं की किस्म का फाइल फोटो। • सौजन्य हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय

अगले वर्ष से होगा बीज उपलब्ध

पादप एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डा. एके छाबड़ा ने बताया कि रबी के मौसम के लिए सिफारिश की गई इस किस्म का बीज अगले वर्ष किसानों के लिए उपलब्ध करवा दिया जाएगा। यह किस्म किसानों के लिए वरदान साबित होगी।

इन विज्ञानियों की मेहनत लाई रंग

गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के गेहूं अनुभाग के विज्ञानिक डा. ओपी बिश्नोई, डा. विक्रम सिंह, डा. एसके सेठी, डा. एसएस ढांडा, डा. दिव्या फौगाट, डा. एमएस दलाल, डा. सोमवीर, डा. आइएस पंवार, डा. एके छाबड़ा, डा. योगेंद्र कुमार, डा. केडी सहरावत, डा. मुकेश सैनी, डा. रमेश कुमार, डा. कृष्ण कुमार, डा. वाईपीएस सोलंकी, डा. ए लोकेश्वर रेड्डी, डा. आरएस बेनीवाल, डा. रेनू मुंजाल, डा. भगत सिंह, डा. नरेश सांगवान, डा. आरएस कंवर, डा. प्रियंका, डा. राकेश पूनिया, डा. मुकेश कुमार, डा. निशा कुमारी, डा. बबीता व डा. हरबिंद्र सिंह का भी विशेष सहयोग रहा।

उपलब्धि

- डब्ल्यूएच 1270 की अधिकतम पैदावार 91.5 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक
- पीला रतवा और भूत रतवा रोगरोधी है गेहूं की यह प्रजाति

इस किस्म की खूबियां

इस किस्म की खास बात यह है कि यह गेहूं की मुख्य बीमारियां पीला रतवा व भूरा रतवा के प्रति रोगरोधी है। इसके अलावा गेहूं के प्रमुख क्षेत्रों में प्रचलित मुख्य बीमारियां जैसे पत्ता अंगमारी, सफेद चूर्णी व पत्तियों की कांग्यिारी के प्रति भी रोगरोधी है। यह किस्म 156 दिन तक पककर तैयार हो जाती है। इसकी औसत ऊंचाई भी 100 सेंटीमीटर तक होती है, जिसके कारण यह खेत में गिरती नहीं। इस किस्म में प्रोटीन भी अन्य किस्मों की तुलना में अधिक है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........दैनिक भास्कर........

दिनांक 15-12-2020 पृष्ठ संख्या....2....कॉलम....3-6....

एचएयू के वैज्ञानिकों ने गेहूं की उन्नत किस्म डब्ल्यूएच 1270 विकसित की, 91.5 क्विंटल प्रति हेक्टेयर मिलेगी पैदावार

रबी के मौसम के लिए सिफारिश की गई, इस किस्म का बीज अगले वर्ष किसानों के लिए उपलब्ध होगाः डॉ. छाबड़ा

भास्कर न्यूज| हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म विकसित की है। किसानों को 91.5 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक की पैदावार मिल सकेगी। यही नहीं खाने भी स्वादिष्ट है। आज हरियाणा प्रदेश गेहूं के प्रति हेक्टेयर उत्पादन क्षमता में देशभर में प्रथम स्थान पर है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के गेहूं अनुभाग ने विकसित किया है। विश्वविद्यालय की तरफ से विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' की ओर से नई दिल्ली में हाल ही में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी की है।

जानिए... किन-किन वैज्ञानिकों की मेहनत रंग लाई

गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के गेहूं अनुभाग के वैज्ञानिक डॉ. ओपी बिश्नोई, डॉ. विक्रम सिंह, डॉ. एसके सेठी, डॉ. एसएस ढांडा, डॉ. दिव्या फोगाट, डॉ. एमएस दलाल, डॉ. सोमवीर, डॉ. आईएस पंवार, डॉ. ए.के. छाबड़ा, डॉ. योगेंद्र कुमार, डॉ. केडी सहरावत, डॉ. मुकेश सैनी, डॉ. रमेश कुमार, डॉ. कृष्ण कुमार, डॉ. वाईपीएस सोलंकी और डॉ. ए.लोकेश्वर रेड्डी के अलावा डॉ. आर.एस. बेनीवाल, डॉ. रेनू मुंजाल, डॉ. भगत सिंह, डॉ. नरेश सांगवान, डॉ. आर.एस. कंवर, डॉ. प्रिंयका, डॉ. राकेश पुनियां, डॉ. मुकेश कुमार, डॉ.निशा कुमारी, डॉ. बबीता व डॉ. हरबिंद्र सिंह का भी विशेष सहयोग रहा।

प्रो. समर सिंह ने कहा-वैज्ञानिकों की मेहनत काबिलेतारीफ

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने वैज्ञानिकों द्वारा इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों की मेहनत बहुत ही काबिलेतारिफ है, जिनकी बदौलत आज केंद्रीय खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का मुख्य स्थान है और गेहूं उत्पादन में देशभर में प्रथम स्थान पर है। पादप एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एके छाबड़ा ने बताया कि रबी के मौसम के लिए सिफारिश की गई इस किस्म का बीज अगले वर्ष किसानों के लिए उपलब्ध करवा दिया जाएगा। यह किस्म किसानों के लिए वरदान साबित होगी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....अमर उजाला.....

दिनांक 15.12.2020...पृष्ठ संख्या.....2.....कॉलम.....3-6.....

कामयाबी

एचएयू के वैज्ञानिकों ने गेहूं की उन्नत किस्म की विकसित, खाने में भी स्वादिष्ट

डब्ल्यूएच 1270 गेहूं से मिलेगी बेहतर पैदावार

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म विकसित की है। आज हरियाणा प्रदेश गेहूं की प्रति हेक्टेयर उत्पादन क्षमता में देशभर में प्रथम स्थान पर है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के गेहूं अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है।

विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उपसमिति द्वारा नई दिल्ली में हाल ही में आयोजित बैठक में अधिसूचित और जारी कर दिया गया है।

गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के लिए अनुमोदित किया गया है। इन क्षेत्रों में पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (कोटा व उदयपुर क्षेत्र को छोड़कर), पश्चिमी उत्तर प्रदेश (झांसी क्षेत्र को छोड़कर), जम्मू-कश्मीर के कठुआ व जम्मू जिले, हिमाचल प्रदेश के ऊना जिला व पौंटा घाटी और उत्तराखंड का तराई क्षेत्र प्रमुख रूप से शामिल हैं। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि गेहूं की इस किस्म को अक्तूबर के अंतिम सप्ताह में बिजाई के लिए अनुमोदित किया गया है।

पादप एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एके छाबड़ा ने बताया कि रबी के मौसम के लिए सिफारिश की गई इस किस्म का बीज अगले वर्ष किसानों के लिए उपलब्ध करवा दिया जाएगा। वहीं विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने वैज्ञानिकों द्वारा इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों की मेहनत काबिले तारीफ है, जिनकी बदौलत आज केंद्रीय खाद्यान्न भंडारण में प्रदेश का मुख्य स्थान है और गेहूं उत्पादन में देशभर में प्रथम स्थान पर है।

हिसार। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह के साथ वैज्ञानिकों की टीम। - अमर उजाला

इन वैज्ञानिकों की मेहनत लाई रंग : गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के गेहूं अनुभाग के वैज्ञानिक डॉ. ओपी बिश्नोई, डॉ. विक्रम सिंह, डॉ. एसके सेठी, डॉ. एसएस ढांडा, डॉ. दिव्या फोगाट, डॉ. एमएस दलाल, डॉ. सोमवीर, डॉ. आईएस पंवार, डॉ. एके छाबड़ा, डॉ. योगेंद्र कुमार, डॉ. केडी सहरावत, डॉ. मुकेश सैनी, डॉ. रमेश कुमार, डॉ. कृष्ण कुमार, डॉ. वाईपीएस सोलंकी और डॉ. ए. लोकेश्वर रेड्डी के अलावा डॉ. आरएस बेनीवाल, डॉ. रेनु मुंजाल, डॉ. भगत सिंह, डॉ. नरेश सांगवान, डॉ. आरएस कंवर, डॉ. प्रियंका, डॉ. राकेश पूनिया, डॉ. मुकेश कुमार, डॉ. निशा कुमारी, डॉ. बबीता और डॉ. हरबिंद्र सिंह का भी विशेष सहयोग रहा।

75.8 विचं प्रति हेक्टेयर पैदावार

इस किस्म में विश्वविद्यालय द्वारा की गई सिफारिशों के अनुसार बिजाई करके उचित खाद, उर्वरक व पानी दिया जाए तो इसकी औसतन पैदावार 75.8 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हो सकती है और अधिकतम पैदावार 91.5 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक ली जा सकती है। इस किस्म की खास बात यह है कि गेहूं की मुख्य बीमारियां पीला रतवा व भूरा रतवा के प्रति रोगरोधी है। यह किस्म 156 दिन तक पककर तैयार हो जाती है। इसकी औसत ऊंचाई भी 100 सेंटीमीटर तक होती है, जिसके कारण यह खेत में गिरती नहीं। इस किस्म में प्रोटीन भी अन्य किस्मों की तुलना में अधिक है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....दैनिक सवेरा.....

दिनांक 15.12.2020...पृष्ठ संख्या.....1.....कॉलम...1-5.....

हकृवि के वैज्ञानिकों ने गेहूं की पैदावर में उन्नत किस्म की तैयार

● अधिकतम पैदावार 91.5 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक, खाने में भी स्वादिष्ट

हिसार, 14 दिसंबर (सुरेंद्र सोढी) :चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की मेहनत की बदौलत एक ओर उपलब्धि विश्वविद्यालय ने अपने नाम कर ली है। अब वैज्ञानिकों ने गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म विकसित की है। यह वैज्ञानिकों की मेहनत का ही परिणाम है कि हरियाणा प्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से अन्य प्रदेशों की तुलना में बहुत ही छोटा है जबकि देश के केंद्रीय खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का कुल भण्डारण का 16 प्रतिशत हिस्सा है और फसल उत्पादन में अग्रणी प्रदेशों में है, जो अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। आज हरियाणा प्रदेश गेहूं के प्रति हेक्टेयर उत्पादन क्षमता में देशभर में प्रथम स्थान पर है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के गेहूं अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में हाल ही में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है।

गेहूं की किस्म का फाइल फोटो।

उत्तर भारत के मैदानी इलाकों के लिए की गई विकसित

गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के लिए अनुमोदित किया गया है। इन क्षेत्रों में पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान(कोटा व उदयपुर क्षेत्र को छोड़कर), पश्चिमी उत्तर प्रदेश(झांसी क्षेत्र को छोड़कर), जम्मू-कश्मीर के कठुआ व जम्मू जिले, हिमाचल प्रदेश के ऊना जिला व पौंटा घाटी और उत्तराखण्ड का तराई क्षेत्र प्रमुख रूप से शामिल हैं।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने वैज्ञानिकों द्वारा इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों की मेहनत बहुत ही काबिलेतारिफ है, जिनकी बदौलत आज केंद्रीय खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का मुख्य स्थान है और गेहूं उत्पादन में देशभर में प्रथम स्थान पर है। पादप एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. छाबड़ा ने बताया कि रबी के मौसम के लिए सिफारिश की गई इस किस्म का बीज अगले वर्ष किसानों के लिए उपलब्ध करवा दिया जाएगा। यह किस्म किसानों के लिए वरदान साबित होगी।

सिफारिश अनुसार बिजाई करने पर मिलती है अधिक पैदावार : डा. एस.के. सहरावत

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि गेहूं की इस किस्म को अक्तूबर के अंतिम सप्ताह में बिजाई के लिए अनुमोदित किया गया है। अगेती बिजाई करने पर इसकी पैदावार प्रति एकड़ 4 से 8 क्विंटल तक अधिक ली जा सकती है। उन्होंने बताया कि इस किस्म में विश्वविद्यालय द्वारा की गई सिफारिशों के अनुसार बिजाई करके उचित खाद, उर्वरक व पानी दिया जाए तो इसकी औसतन पैदावार 75.8 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हो सकती है और अधिकतम पैदावार 91.5 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक ली जा सकती है। इस किस्म की खास बात यह है कि यह गेहूं की मुख्य बिमारियां पीला रत्तवा व भूरा रत्तवा के प्रति रोगरोधी है। इसके अलावा गेहूं के प्रमुख क्षेत्रों में प्रचलित मुख्य बिमारियां जैसे पत्ता अंगमारी, सफेद चुर्णी व पत्तियों की कांग्यिारी के प्रति भी रोगरोधी है। यह किस्म 156 दिन तक पककर तैयार हो जाती है और इसकी औसत ऊंचाई भी 100 सेंटीमीटर तक होती है, जिसके कारण यह खेत में गिरती नहीं। इस किस्म में प्रोटीन भी अन्य किस्मों की तुलना में अधिक है।

इन वैज्ञानिकों की मेहनत लाई रंग

गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के गेहूं अनुभाग के वैज्ञानिक डॉ. ओ.पी. बिश्नोई, डॉ. विक्रम सिंह, डॉ. एस.के. सेठी, डॉ. एस.एस. ढांडा, डॉ. दिव्या फोगाट, डॉ. एम.एस. दलाल, डॉ. सोमवीर, डॉ. आई.एस. पंवार, डॉ. ए.के. छाबड़ा, डॉ. योगेंद्र कुमार, डॉ. के.डी. सहरावत, डॉ. मुकेश सैनी, डॉ. रमेश कुमार, डॉ. कृष्ण कुमार, डॉ. वाई.पी.एस. सोलंकी और डॉ. ए.लोकेश्वर रेड्डी के अलावा डॉ. आर.एस. बेनीवाल, डॉ. रेनू मुंजाल, डॉ. भगत सिंह, डॉ. नरेश सांगवान, डॉ. आर.एस. कंवर, डॉ. प्रियंका, डॉ. राकेश पुनियां, डॉ. मुकेश कुमार, डॉ.निशा कुमारी, डॉ. बबीता व डॉ. हरबिंद्र सिंह का भी विशेष सहयोग रहा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........दैनिक ट्रिब्यून........

दिनांक 15.12.2020 पृष्ठ संख्या....8....कॉलम....4-5....

हकृवि वैज्ञानिकों ने विकसित की डब्ल्यूएच 1270 गेहूं की किस्म

हिसार, 14 दिसंबर (निस)

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकृवि) के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 किस्म विकसित की है। वैज्ञानिकों का दावा है कि यह किस्म उत्तर भारत के अन्नदाताओं को मालामाल करेगी। इस किस्म को केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नयी दिल्ली में हाल ही में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है।

गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के लिए अनुमोदित किया गया है। इन क्षेत्रों में पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (कोटा व उदयपुर क्षेत्र को छोड़कर), पश्चिमी उत्तर प्रदेश (झांसी क्षेत्र को छोड़कर), जम्मू-कश्मीर के कठुआ व जम्मू जिले, हिमाचल प्रदेश के ऊना जिला व पौंटा घाटी और उत्तराखण्ड का तराई क्षेत्र प्रमुख रूप से शामिल हैं।

हकृवि के कृषि वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 गेहूं की फसल। -निस

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके. सहरावत ने बताया कि गेहूं की इस किस्म को अक्तूबर के अंतिम सप्ताह में बिजाई के लिए अनुमोदित किया गया है। अगेती बिजाई करने पर इसकी पैदावार प्रति एकड़ 4 से 8 क्विंटल तक अधिक ली जा सकती है। उन्होंने बताया कि इस किस्म में विश्वविद्यालय द्वारा की गई सिफारिशों के अनुसार बिजाई करके उचित खाद, उर्वरक व पानी दिया जाए तो इसकी औसतन पैदावार 75.8 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हो सकती है और अधिकतम पैदावार 91.5 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक ली जा सकती है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पंजाब केसरी.....

दिनांक 15.12.2020...पृष्ठ संख्या.....3.....कॉलम.....4-8.....

'एच.ए.यू. वैज्ञानिकों ने अधिक पैदावार देने वाली गेहूं की उन्नत किस्म डब्ल्यू.एच. 1270 विकसित की'

हिसार, 14 दिसम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की मेहनत की बदौलत एक ओर उपलब्धि विश्वविद्यालय ने अपने नाम कर ली है। अब वैज्ञानिकों ने गेहूं की डब्ल्यू.एच. 1270 उन्नत किस्म विकसित की है।

विश्वविद्यालय के अनुसार गेहूं की डब्ल्यू.एच. 1270 इस किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के लिए अनुमोदित किया गया है। इन क्षेत्रों में पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (कोटा व उदयपुर क्षेत्र को छोड़कर), पश्चिमी उत्तर प्रदेश (झांसी क्षेत्र को छोड़कर), जम्मू-कश्मीर के कठुआ व जम्मू जिले, हिमाचल प्रदेश के ऊना जिला व पौंटा घाटी और उत्तराखण्ड का तराई क्षेत्र प्रमुख रूप से शामिल हैं।

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डा. एस.के. सहरावत ने बताया कि इस किस्म में विश्वविद्यालय द्वारा की गई सिफारिशों के अनुसार बिजाई करके उचित खाद, उर्वरक व पानी दिया जाए तो इसकी औसतन पैदावार 75.8 क्विंटल प्रति हैक्टेयर हो सकती है और अधिकतम पैदावार 91.5 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक ली जा सकती है। इस किस्म की खास बात यह है कि यह गेहूं की मुख्य बीमारियां पीला रत्तवा व भूरा रत्तवा के प्रति रोगरोधी है।

इसके अलावा गेहूं के प्रमुख क्षेत्रों में प्रचलित मुख्य बीमारियां जैसे पत्ता अंगमारी, सफेद चुर्णी व पतियों की कांग्यिारी के प्रति भी रोगरोधी है। यह किस्म 156 दिन तक पककर तैयार हो जाती है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम......भा. स्कोर......

दिनांक 14.12.2020...पृष्ठ संख्या.....—.....कॉलम.....—.....

हकृवि वैज्ञानिकों ने विकसित की गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म

हिसार/14 दिसंबर/रिपोर्टर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की मेहनत की बदौलत एक और उपलब्धि विश्वविद्यालय ने अपने नाम कर ली है। अब वैज्ञानिकों ने गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म विकसित की है। यह वैज्ञानिकों की मेहनत का ही परिणाम है कि हरियाणा प्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से अन्य प्रदेशों की तुलना में बहुत ही छोटा है जबकि देश के केंद्रीय खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का कुल भण्डारण का 16 प्रतिशत हिस्सा है और फसल उत्पादन में अग्रणी प्रदेशों में है, जो अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। आज हरियाणा प्रदेश गेहूं के प्रति हैक्टेयर उत्पादन क्षमता में देशभर में प्रथम स्थान पर है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के गेहूं अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में हाल ही में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के लिए अनुमोदित किया गया है। इन क्षेत्रों में पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (कोटा व उदयपुर क्षेत्र को छोड़कर), पश्चिमी उत्तर प्रदेश (झांसी क्षेत्र को छोड़कर), जम्मू-कश्मीर के कठुआ व जम्मू जिले, हिमाचल प्रदेश के ऊना जिला व पौंटा घाटी और उत्तराखण्ड का तराई क्षेत्र प्रमुख रूप से शामिल हैं।

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि गेहूं की इस किस्म को अक्टूबर के अंतिम सप्ताह में बिजाई के लिए अनुमोदित किया गया है। अगेती बिजाई करने पर इसकी पैदावार प्रति एकड़ 4 से 8 क्विंटल तक अधिक ली जा सकती है। उन्होंने बताया कि इस किस्म में विश्वविद्यालय द्वारा की गई सिफारिशों के अनुसार बिजाई करके उचित खाद, उर्वरक व पानी दिया जाए तो इसकी औसतन पैदावार 75.8 क्विंटल प्रति हैक्टेयर हो सकती है और अधिकतम पैदावार 91.5 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक ली जा सकती है। इस किस्म की खास बात यह है कि यह गेहूं की मुख्य बिमारियां पीला रत्तवा व भूरा रत्तवा के प्रति रोगरोधी है। इसके अलावा गेहूं के प्रमुख क्षेत्रों में प्रचलित मुख्य बिमारियां जैसे पत्ता अंगमारी, सफेद चुर्णी व पत्तियों की कांग्यिारी के प्रति भी रोगरोधी है। यह किस्म 156 दिन तक पक कर तैयार हो जाती है और इसकी औसत ऊंचाई भी 100 सेंटीमीटर तक होती है, जिसके कारण यह खेत में गिरती नहीं। इस किस्म में प्रोटीन भी अन्य किस्मों की तुलना में अधिक है।

गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के गेहूं अनुभाग के वैज्ञानिक डॉ. ओपी बिश्नोई, डॉ. विक्रम सिंह, डॉ. एसके सेठी, डॉ. एसएस ढांडा, डॉ. दिव्या फोगाट, डॉ. एमएस दलाल, डॉ. सोमवीर, डॉ. आईएस पंवार, डॉ. एके छाबड़ा, डॉ. योगेंद्र कुमार, डॉ. केडी सहरावत, डॉ. मुकेश सैनी, डॉ. रमेश कुमार, डॉ. कृष्ण कुमार, डॉ. वाईपीएस सोलंकी और डॉ. ए लोकेश्वर रेड्डी के अलावा डॉ. आरएस बेनीवाल, डॉ. रेनू मुंजाल, डॉ. भगत सिंह, डॉ. नरेश सांगवान, डॉ. आरएस कंवर, डॉ. प्रियंका, डॉ. राकेश पुनियां, डॉ. मुकेश कुमार, डॉ. निशा कुमारी, डॉ. बबीता व डॉ. हरबिंद्र सिंह का भी विशेष सहयोग रहा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम......अजीत समाचार......

दिनांक 15.12.2020 पृष्ठ संख्या...—...कॉलम...—...

एचएयू वैज्ञानिकों ने अधिक पैदावार देने वाली गेहूं की उन्नत किस्म डब्ल्यूएच 1270 की विकसित

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह के साथ गेहूं की उन्नत किस्म विकसित करने वाले वैज्ञानिकों की टीम के सदस्य। (छाया : राज पराशर)

अधिकतम पैदावार 91.5 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक, खाने में भी स्वादिष्ट

हिसार/मंगाली नलवा, 14 दिसम्बर (राज पराशर/देवानंद सोनी): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की मेहनत की बदौलत एक और उपलब्धि विश्वविद्यालय ने अपने नाम कर ली है। अब वैज्ञानिकों ने गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म विकसित की है। यह वैज्ञानिकों की मेहनत का ही परिणाम है कि हरियाणा प्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से अन्य प्रदेशों की तुलना में बहुत ही छोटा है जबकि देश के केंद्रीय खाद्यान भंडारण में प्रदेश का कुल भंडारण का 16 प्रतिशत हिस्सा है और फसल उत्पादन में अग्रणी प्रदेशों में है, जो अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। आज हरियाणा प्रदेश गेहूं के प्रति हेक्टेयर उत्पादन क्षमता में देशभर में प्रथम स्थान पर है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौधा प्रजनन विभाग के गेहूं अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में हाल ही में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है।

उत्तर भारत के मैदानी इलाकों के लिए की गई है विकसित : गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के लिए अनुमोदित किया गया है। इन क्षेत्रों में पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान(कोटा व उदयपुर क्षेत्र को छोड़कर), पश्चिमी उत्तर प्रदेश(झांसी क्षेत्र को छोड़कर), जम्मू-कश्मीर के कठुआ व जम्मू जिले, हिमाचल प्रदेश के ऊना जिला व पौंटा घाटी और उत्तराखण्ड का तराई क्षेत्र प्रमुख रूप से शामिल हैं।

सिफारिश अनुसार बिजाई करने पर मिलती है अधिक पैदावार : डॉ. एस.के. सहरावत

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि गेहूं की इस किस्म को अक्तूबर के अंतिम सप्ताह में बिजाई के लिए अनुमोदित किया गया है। अगेती बिजाई करने पर इसकी पैदावार प्रति एकड़ 4 से 8 क्विंटल तक अधिक ली जा सकती है। उन्होंने बताया कि इस किस्म में विश्वविद्यालय द्वारा की गई सिफारिशों के अनुसार बिजाई करके उचित खाद, उर्वरक व पानी दिया जाए तो इसकी औसतन पैदावार 75.8 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हो सकती है और अधिकतम पैदावार 91.5 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक ली जा सकती है। इस किस्म की खास बात यह है कि यह गेहूं की मुख्य बिमारियां पीला रतवा व भूरा रतवा के प्रति रोगरोधी है। इसके अलावा गेहूं के प्रमुख क्षेत्रों में प्रचलित मुख्य बिमारियां जैसे पत्ता अंगमारी, सफेद चूर्णी व पत्तियों की कांग्यिारी के प्रति भी रोगरोधी है। यह किस्म 156 दिन तक पककर तैयार हो जाती है और इसकी औसत ऊंचाई भी 100 सेंटीमीटर तक होती है, जिसके कारण यह खेत में गिरती नहीं। इस किस्म में प्रोटीन भी अन्य किस्मों की तुलना में अधिक है।

इन वैज्ञानिकों की मेहनत लाई रंग

गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौधा प्रजनन विभाग के गेहूं अनुभाग के वैज्ञानिक डॉ. ओ.पी. बिश्नोई, डॉ. विक्रम सिंह, डॉ. एस.के. सेठी, डॉ. एस.एस. ढांडा, डॉ. दिव्या फोगाट, डॉ. एम.एस. दलाल, डॉ. सोमवीर, डॉ. आई.एस. पंवार, डॉ. ए.के. छाबड़ा, डॉ. योगेंद्र कुमार, डॉ. के.डी. सहरावत, डॉ. मुकेश सैनी, डॉ. रमेश कुमार, डॉ. कृष्णा कुमार, डॉ. वाई.पी.एस. सोलंकी और डॉ. ए.लोकेश्वर रेड्डी के अलावा डॉ. आर.एस. बेनीवाल, डॉ. रेनु मुंजाल, डॉ. भगत सिंह, डॉ. नरेश सांगवान, डॉ. आर.एस. कंवर, डॉ. प्रियंका, डॉ. राकेश पुनिया, डॉ. मुकेश कुमार, डॉ.निशा कुमारी, डॉ. बबीता व डॉ. हरविंद्र सिंह का भी विशेष सहयोग रहा।

अगले वर्ष से होगा बीज उपलब्ध : डॉ. ए.के. छाबड़ा

पादप एवं पौधा प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. छाबड़ा ने बताया कि रबी के मौसम के लिए सिफारिश की गई इस किस्म का बीज अगले वर्ष किसानों के लिए उपलब्ध करवा दिया जाएगा। यह किस्म किसानों के लिए वरदान साबित होगी।

वैज्ञानिकों की मेहनत काबिलेतारिफ : प्रोफेसर समर सिंह

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने वैज्ञानिकों द्वारा इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों की मेहनत बहुत ही काबिलेतारिफ है, जिनकी बदौलत आज केंद्रीय खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का मुख्य स्थान है और गेहूं उत्पादन में देशभर में प्रथम स्थान पर है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....सिटी पल्स.....

दिनांक 14.12.2020 पृष्ठ संख्या.....—.....कॉलम.....—.....

उपलब्धि अधिकतम पैदावार 91.5 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक, खाने में भी स्वादिष्ट

एचएयू वैज्ञानिकों ने अधिक पैदावार देने वाली गेहूं की उन्नत किस्म डब्ल्यूएच 1270 विकसित की

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की मेहनत की बदौलत एक ओर उपलब्धि विश्वविद्यालय ने अपने नाम कर ली है। अब वैज्ञानिकों ने गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म विकसित की है। यह वैज्ञानिकों की मेहनत का ही परिणाम है कि हरियाणा प्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से अन्य प्रदेशों की तुलना में बहुत ही छोटा है जबकि देश के केंद्रीय खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का कुल भण्डारण का 16 प्रतिशत हिस्सा है और फसल उत्पादन में अग्रणी प्रदेशों में है, जो अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के गेहूं अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में हाल ही में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है।

हिसार। कुलपति समर सिंह के साथ गेहूं की उन्नत किस्म विकसित करने वाले वैज्ञानिकों की टीम के सदस्य

लिए की गई है विकसित

उत्तर भारत के मैदानी इलाकों के लिए गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के लिए अनुमोदित किया गया है। इन क्षेत्रों में पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान(कोटा व उदयपुर क्षेत्र को छोड़कर), पश्चिमी उत्तर प्रदेश(झांसी क्षेत्र को छोड़कर), जम्मू-कश्मीर के कठुआ व जम्मू जिले, हिमाचल प्रदेश के ऊना जिला व पौंटा घाटी और उत्तराखण्ड का तराई क्षेत्र प्रमुख रूप से शामिल हैं।

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि गेहूं की इस किस्म को अक्तूबर के अंतिम सप्ताह में बिजाई के लिए अनुमोदित किया गया है। अगेती बिजाई करने पर इसकी पैदावार प्रति एकड़ 4 से 8 क्विंटल तक अधिक ली जा सकती है। इस किस्म की खास बात यह है कि यह गेहूं की मुख्य बिमारियां पीला रतवा व भूरा रतवा के प्रति रोगरोधी है।

इन वैज्ञानिकों की मेहनत लाई रंग

गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के गेहूं अनुभाग के वैज्ञानिक डॉ. ओ.पी. बिश्नोई, डॉ. विक्रम सिंह, डॉ. एस.के. मेहरी, डॉ. एस.एस. ढांडा, डॉ. दिव्या कोगट, डॉ. एम.एस. दलाल, डॉ. सोमवीर, डॉ. आई.एस. पंवार, डॉ. ए.के. छाबड़ा, डॉ. योगेंद्र कुमार, डॉ. के.डी. सहरावत, डॉ. मुकेश सैनी, डॉ. रमेश कुमार, डॉ. कृष्ण कुमार, डॉ. वाई.पी.एस. सोलंकी और डॉ. ए.लोकेश्वर रेड्डी के अलावा डॉ. आर.एस. बेनीवाल, डॉ. रेनू मुंजाल, डॉ. भगत सिंह, डॉ. नरेश सांगवान, डॉ. आर.एस. कंवर, डॉ. प्रियंका, डॉ. राकेश पूनिया, डॉ. मुकेश कुमार, डॉ.निशा कुमारी, डॉ. बबीता व डॉ. हरविंद सिंह का भी विशेष सहयोग रहा। कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने वैज्ञानिकों द्वारा इस उपलब्धि पर चर्चाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया।

गेहूं की किस्म का फाइल फोटो।

अगले वर्ष से होगा बीज उपलब्ध : डॉ. ए.के. छाबड़ा

पादप एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. छाबड़ा ने बताया कि रबी के मौसम के लिए सिफारिश की गई इस किस्म का बीज अगले वर्ष किसानों के लिए उपलब्ध करवा दिया जाएगा। यह किस्म किसानों के लिए वरदान साबित होगी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पाठक पक्ष.....

दिनांक 14.12.2020 पृष्ठ संख्या.....1.....कॉलम.....1.....

एचएयू वैज्ञानिकों ने अधिक पैदावार देने वाली गेहूं की उन्नत किस्म डब्ल्यूएच 1270 विकसित की

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 14 दिसम्बर : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की मेहनत की बदौलत एक ओर उपलब्धि विश्वविद्यालय ने अपने नाम कर ली है। अब वैज्ञानिकों ने गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म विकसित की है। यह वैज्ञानिकों की मेहनत का ही परिणाम है कि हरियाणा प्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से अन्य प्रदेशों की तुलना में बहुत ही छोटा है जबकि देश के केंद्रीय खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का कुल भण्डारण का 16 प्रतिशत हिस्सा है और फसल उत्पादन में अग्रणी प्रदेशों में है, जो अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। आज हरियाणा प्रदेश गेहूं के प्रति हेक्टेयर उत्पादन क्षमता में देशभर में प्रथम स्थान पर है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के गेहूं अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में हाल ही में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के गेहूं अनुभाग

के वैज्ञानिक डॉ. ओ.पी. बिश्नोई, डॉ. विक्रम सिंह, डॉ. एस.के. सेठी, डॉ. एस.एस. ढांडा, डॉ. दिव्या फोगाट, डॉ. एम.एस. दलाल, डॉ. सोमवीर, डॉ. आई.एस. पंवार, डॉ. ए.के. छाबड़ा, डॉ. योगेंद्र कुमार, डॉ. के.डी. सहरावत, डॉ. मुकेश सैनी, डॉ. रमेश कुमार, डॉ. कृष्ण कुमार, डॉ. वाई.पी.एस. सोलंकी और डॉ. ए.लोकेश्वर रेड्डी के अलावा डॉ. आर.एस. बेनीवाल, डॉ. रेनू मुंजाल, डॉ. भगत सिंह, डॉ. नरेश सांगवान, डॉ. आर.एस. कंवर, डॉ. प्रिंयका, डॉ. राकेश पूनिया, डॉ. मुकेश कुमार, डॉ.निशा कुमारी, डॉ. बबीता व डॉ. हरबिंद्र सिंह का भी विशेष सहयोग रहा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने वैज्ञानिकों द्वारा इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों की मेहनत बहुत ही काबिलेतारिफ है, जिनकी बदौलत आज केंद्रीय खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का मुख्य स्थान है और गेहूं उत्पादन में देशभर में प्रथम स्थान पर है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम......समस्त हरियाणा......

दिनांक .14.:12.:2022..पृष्ठ संख्या.......—.......कॉलम.......—.......

हकृवि ने गेहूं की डब्ल्यूएच-1270 किस्म विकसित की

अधिकतम पैदावार 91.5 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक, खाने में भी स्वादिष्ट

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की मेहनत की बदौलत एक और उपलब्धि विश्वविद्यालय ने अपने नाम कर ली है। अब वैज्ञानिकों ने गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म विकसित की है।

यह वैज्ञानिकों की मेहनत का ही परिणाम है कि हरियाणा प्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से अन्य प्रदेशों की तुलना में बहुत ही छोटा है जबकि देश के केंद्रीय खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का कुल भण्डारण का 16 प्रतिशत हिस्सा है और फसल उत्पादन में अग्रणी प्रदेशों में है, जो अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। आज हरियाणा प्रदेश गेहूं के प्रति हेक्टेयर उत्पादन क्षमता में देशभर में प्रथम स्थान पर है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के गेहूं अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में हाल ही में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है।

सिफारिश अनुसार बिजाई करने पर मिलती है अधिक पैदावार : डॉ. एस.के. सहरावत

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि गेहूं की इस किस्म को अक्तूबर के अंतिम सप्ताह में बिजाई के लिए अनुमोदित किया गया है। अगेती बिजाई करने पर इसकी पैदावार प्रति एकड़ 4 से 8 क्विंटल तक अधिक ली जा सकती है। उन्होंने बताया कि इस किस्म में विश्वविद्यालय द्वारा की गई सिफारिशों के अनुसार बिजाई करके उचित खाद, उर्वरक व पानी दिया जाए तो इसकी औसतन पैदावार 75.8 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हो सकती है और अधिकतम पैदावार 91.5 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक ली जा सकती है। इस किस्म की खास बात यह है कि यह गेहूं की मुख्य बिमारियां पीला रतवा व भूरा रतवा के प्रति रोगरोधी है। इसके अलावा गेहूं के प्रमुख क्षेत्रों में प्रचलित मुख्य बिमारियां जैसे पत्ता अंगमारी, सफेद चुर्णी व पत्तियों की कॉग्यिारी के प्रति भी रोगरोधी है। यह किस्म 156 दिन तक पककर तैयार हो जाती है और इसकी औसत ऊंचाई भी 100 सेंटीमीटर तक होती है, जिसके कारण यह खेत में गिरती नहीं। किस्म में प्रोटीन भी अन्य किस्मों की तुलना में अधिक है।

इन वैज्ञानिकों की मेहनत लाई रंग

गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के गेहूं अनुभाग के वैज्ञानिक डॉ. ओ.पी. बिश्नोई, डॉ. विक्रम सिंह, डॉ. एस.के. सेठी, डॉ. एस.एस. ढांडा, डॉ. दिव्या फोगाट, डॉ. एम.एस. दलाल, डॉ. सोमवीर, डॉ. आई.एस. पंवार, डॉ. ए.के. छाबड़ा, डॉ. योगेंद्र कुमार, डॉ. के.डी. सहरावत, डॉ. मुकेश सैनी, डॉ. रमेश कुमार, डॉ. कृष्ण कुमार, डॉ. वाई.पी.एस. सोलंकी और डॉ. ए.लोकेश्वर रेड्डी के अलावा डॉ. आर.एस. बेनीवाल, डॉ. रेनू मुंजाल, डॉ. भगत सिंह, डॉ. नरेश सांगवान, डॉ. आर.एस. कंवर, डॉ. प्रियंका, डॉ. राकेश पुनियां, डॉ. मुकेश कुमार, डॉ.निशा कुमारी, डॉ. बबीता व डॉ. हरविंद्र सिंह का भी विशेष सहयोग रहा।

अगले वर्ष से होगा बीज उपलब्ध : डॉ. छाबड़ा

पादप एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. छाबड़ा ने बताया कि रबी के मौसम के लिए सिफारिश की गई इस किस्म का बीज अगले वर्ष किसानों के लिए उपलब्ध करवा दिया जाएगा। यह किस्म किसानों के लिए वरदान साबित होगी।

वैज्ञानिकों की मेहनत काबिलेतारिफ : प्रो. समर सिंह

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने वैज्ञानिकों द्वारा इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों की मेहनत बहुत ही काबिलेतारिफ है, जिनकी बदौलत आज केंद्रीय खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का मुख्य स्थान है और गेहूं उत्पादन में देशभर में प्रथम स्थान पर है।

गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के लिए अनुमोदित किया गया है। इन क्षेत्रों में पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान(कोटा व उदयपुर क्षेत्र को छोड़कर), पश्चिमी उत्तर प्रदेश(झांसी क्षेत्र को छोड़कर), जम्मू-कश्मीर के कठुआ व जम्मू जिले, हिमाचल प्रदेश के ऊना जिला व पौंटा घाटी और उत्तराखण्ड का तराई क्षेत्र प्रमुख रूप से शामिल हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........अग्रमार्ग........

दिनांक 14.12.2020 पृष्ठ संख्या........–........ कॉलम........–........

एचएयू वैज्ञानिकों ने अधिक पैदावार देने वाली गेहूं की किस्म डब्ल्यूएच 1270 विकसित की

अग्रमार्ग न्यूज

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने मेहनत की बदौलत एक और उपलब्धि विश्वविद्यालय ने अपने नाम की है। अब वैज्ञानिकों ने गेहूं की डब्ल्यूएच-1270 उन्नत किस्म विकसित की है।

यह वैज्ञानिकों की मेहनत का ही परिणाम है कि हरियाणा प्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से अन्य प्रदेशों की तुलना में बहुत ही छोटा है जबकि देश के केंद्रीय खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का कुल भंडारण का 16 प्रतिशत हिस्सा है और फसल उत्पादन में अग्रणी प्रदेशों में है, जो अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। आज हरियाणा प्रदेश गेहूं के प्रति हेक्टेयर उत्पादन क्षमता में देशभर में प्रथम स्थान पर है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के गेहूं अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में हाल ही में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है।

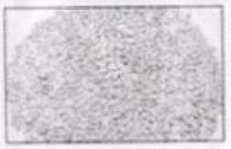

उत्तर भारत के मैदानी इलाकों के लिए की गई है विकसित

गेहूं की डब्ल्यूएच-1270 उन्नत किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के लिए अनुमोदित किया गया है। इन क्षेत्रों में पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (कोटा व उदयपुर क्षेत्र को छोड़कर), पश्चिमी उत्तर प्रदेश (झांसी क्षेत्र को छोड़कर), जम्मू-कश्मीर के कठुआ व जम्मू जिले, हिमाचल प्रदेश के ऊना जिला व पौंटा घाटी और उत्तराखंड का तराई क्षेत्र प्रमुख रूप से शामिल हैं।

सिफारिश अनुसार बिजाई करने पर मिलती है अधिक पैदावार : डॉ. सहरावत

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि गेहूं की इस किस्म को अक्तूबर के अंतिम सप्ताह में बिजाई के लिए अनुमोदित किया गया है। अगेती बिजाई करने पर इसकी पैदावार प्रति एकड़ 4 से 8 क्विंटल तक अधिक ली जा सकती है। उन्होंने बताया कि इस किस्म में विश्वविद्यालय द्वारा की गई सिफारिशों के अनुसार बिजाई करके उचित खाद, उर्वरक व पानी दिया जाए तो इसकी औसतन पैदावार 75.8 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हो सकती है और अधिकतम पैदावार 91.5 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक ली जा सकती है। इस किस्म की खास बात यह है कि यह गेहूं की मुख्य बिमारियां पीला रतुआ व भूरा रतुआ के प्रति रोगरोधी है। इसके अलावा गेहूं के प्रमुख क्षेत्रों में प्रचलित मुख्य बिमारियां जैसे पत्ता अंगमारी, सफेद चुर्णी व पत्तियों की कांग्यारी के प्रति भी रोगरोधी है। यह किस्म 156 दिन तक पककर तैयार हो जाती है और इसकी औसत ऊंचाई भी 100 सेंटीमीटर तक होती है।

इनकी मेहनत लाई रंग

गेहूं की डब्ल्यूएच-1270 उन्नत किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के गेहूं अनुभाग के वैज्ञानिक डॉ. ओ.पी. बिश्नोई, डॉ. विक्रम सिंह, डॉ. एसके सेठी, डॉ. एमएस दलाल, डॉ. दिव्या फोगाट, डॉ. एसएस दलाल, डॉ. सोमवीर, डॉ. आईएस पवार, डॉ. एके छाबड़ा, डॉ. योगेंद्र कुमार, डॉ. केडी सहरावत, डॉ. मुकेश सैनी, डॉ. रमेश कुमार, डॉ. कृष्ण कुमार, डॉ. वाईपीएस सोलंकी और डॉ. एलोकेश्वर रेड्डी के अलावा डॉ. आर.एस. बेनीवाल, डॉ. रेनू मुंजाल, डॉ. भगत सिंह, डॉ. नरेश सांगवान, डॉ. आरएस कंवर, डॉ. प्रियंका, डॉ. राकेश पुनिया, डॉ. मुकेश कुमार, डॉ.निशा कुमारी, डॉ. बबीता व डॉ. हरविंद्र सिंह का विशेष सहयोग रहा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........पांच बजे........

दिनांक 14..12..2020.... पृष्ठ संख्या.......—.......कॉलम.......—.......

अधिकतम पैदावार 91.5 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक, खाने में भी स्वादिष्ट

एचएयू वैज्ञानिकों ने अधिक पैदावार देने वाली गेहूं की उन्नत किस्म डब्ल्यूएच 1270 विकसित की

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की मेहनत की बदौलत एक और उपलब्धि विश्वविद्यालय ने अपने नाम कर ली है। अब वैज्ञानिकों ने गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म विकसित की है। यह वैज्ञानिकों की मेहनत का ही परिणाम है कि हरियाणा प्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से अन्य प्रदेशों की तुलना में बहुत ही छोटा है जबकि देश के केंद्रीय खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का कुल भण्डारण का 16 प्रतिशत हिस्सा है और फसल उत्पादन में अग्रणी प्रदेशों में है, जो अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। आज हरियाणा प्रदेश गेहूं के प्रति हेक्टेयर उत्पादन क्षमता में देशभर में प्रथम स्थान पर है। इस किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के गेहूं अनुभाग द्वारा विकसित किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में हाल ही में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है।

उत्तर भारत के मैदानी इलाकों के लिए की गई है विकसित

गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म को भारत के उत्तर-पश्चिम मैदानी इलाकों के लिए अनुमोदित किया गया है। इन क्षेत्रों में पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान(कोटा व उदयपुर क्षेत्र को छोड़कर), पश्चिमी उत्तर प्रदेश(झांसी क्षेत्र को छोड़कर), जम्मू-कश्मीर के कठुआ व जम्मू जिले, हिमाचल प्रदेश के ऊना जिला व पौंटा घाटी और उत्तराखण्ड का तराई क्षेत्र प्रमुख रूप से शामिल है।

सिफारिश अनुसार बिजाई करने पर मिलती है अधिक पैदावार : डॉ. एस.के. सहरावत

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि गेहूं की इस किस्म को अक्तूबर के अंतिम सप्ताह में बिजाई के लिए अनुमोदित किया गया है। अगेती बिजाई करने पर इसकी पैदावार प्रति एकड़ 4 से 8 क्विंटल तक अधिक ली जा सकती है। उन्होंने बताया कि इस किस्म में विश्वविद्यालय द्वारा की गई सिफारिशों के अनुसार बिजाई करके उचित खाद, उर्वरक व पानी दिया जाए तो इसकी औसतन पैदावार 75.8 क्विंटल प्रति हेक्टेयर हो सकती है और अधिकतम पैदावार 91.5 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक ली जा सकती है। इस किस्म की खास बात यह है कि यह गेहूं की मुख्य बिमारियां पीला रतुआ व भूरा रतुआ के प्रति रोगरोधी है। इसके अलावा गेहूं के प्रमुख क्षेत्रों में प्रचलित मुख्य बिमारियां जैसे पत्ता अंगमारी, सफेद चुर्णी व पत्तियों की कांग्यारी के प्रति भी रोगरोधी है। यह किस्म 156 दिन तक पककर तैयार हो जाती है और इसकी औसत ऊंचाई भी 100 सेंटीमीटर तक होती है, जिसके कारण यह खेत में गिरती नहीं। इस किस्म में प्रोटीन भी अन्य किस्मों की तुलना में अधिक है।

इन वैज्ञानिकों की मेहनत लाई रंग

गेहूं की डब्ल्यूएच 1270 उन्नत किस्म को विश्वविद्यालय के अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के गेहूं अनुभाग के वैज्ञानिक डॉ. ओ.पी. बिश्नोई, डॉ. विक्रम सिंह, डॉ. एस.के. सेठी, डॉ. एस.एस. ढांडा, डॉ. दिव्या फोगाट, डॉ. एम.एस. दलाल, डॉ. सोमवीर, डॉ. आई.एस. पंवार, डॉ. ए.के. छाबड़ा, डॉ. योगेंद्र कुमार, डॉ. के.डी. सहरावत, डॉ. मुकेश सैनी, डॉ. रमेश कुमार, डॉ. कृष्ण कुमार, डॉ. वाई.पी.एस. सोलंकी और डॉ. ए.लोकेश्वर रेड्डी के अलावा डॉ. आर.एस. बेनीवाल, डॉ. रेनु मुंजाल, डॉ. भगत सिंह, डॉ. नरेश सांगवान, डॉ. आर.एस. कंवर, डॉ. प्रियंका, डॉ. राकेश पुनिया, डॉ. मुकेश कुमार, डॉ.निशा कुमारी, डॉ. बबीता व डॉ. हरविंद्र सिंह का भी विशेष सहयोग रहा।

अगले वर्ष से होगा बीज उपलब्ध : डॉ. ए.के. छाबड़ा

पादप एवं पौध प्रजनन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. ए.के. छाबड़ा ने बताया कि रबी के मौसम के लिए सिफारिश की गई इस किस्म का बीज अगले वर्ष किसानों के लिए उपलब्ध करवा दिया जाएगा। यह किस्म किसानों के लिए वरदान साबित होगी।

वैज्ञानिकों की मेहनत काबिलेतारिफ : प्रोफेसर समर सिंह

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने वैज्ञानिकों द्वारा इस उपलब्धि पर बधाई दी और भविष्य में भी निरंतर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों की मेहनत बहुत ही काबिलेतारिफ है, जिनकी बदौलत आज केंद्रीय खाद्यान भण्डारण में प्रदेश का मुख्य स्थान है और गेहूं उत्पादन में देशभर में प्रथम स्थान पर है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....अमर उजाला.....

दिनांक 15.12.2020...पृष्ठ संख्या.....4.....कॉलम.....7-8.....

शिक्षक वर्ग के लिए प्रासंगिक होगा विस्तार प्रबंधन का प्रशिक्षण : डॉ. सिद्धपुरिया

हिसार (ब्यूरो)। विस्तार प्रबंधन की नवीनतम तकनीकों और उनके उपयोग की जानकारी हासिल करने में यह प्रशिक्षण शिक्षक वर्ग के लिए बहुत ही लाभकारी होगा। यह बात चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के निदेशक डॉ. एमएस सिद्धपुरिया ने कही। वे निदेशालय में विस्तार प्रबंधन विषय पर तीन सप्ताह के ऑनलाइन माध्यम से आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के सोमवार को हुए शुभारंभ अवसर पर बोल रहे थे।

डॉ. सिद्धपुरिया ने कहा कि यहां से प्रशिक्षण हासिल कर वैज्ञानिक विश्वविद्यालय में विकसित नई तकनीकों और विभिन्न फसलों की किस्मों की जानकारी को ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने में मदद करेंगे। उन्होंने प्रशिक्षण हासिल करने वाले प्रतिभागियों से इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। उन्होंने प्रतिभागियों को निदेशालय के संगठनात्मक सेट अप से परिचित कराया और इसके चार प्रकोष्ठों में से प्रत्येक के कार्यों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने सभी प्रतिभागियों से सफलतापूर्वक, पूरी लगन और मेहनत से इस कार्यक्रम को पूरा करने का आह्वान किया। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय की संयुक्त निदेशक व पाठ्यक्रम संयोजिका डॉ. मंजू मेहता ने बताया कि इस कार्यक्रम में 32 वैज्ञानिक, शिक्षक व विस्तार विशेषज्ञ भाग ले रहे हैं, जिनमें चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व इसके बाहरी केंद्रों, हैदराबाद और लाला लाजपत राय पशु एवं चिकित्सा महाविद्यालय हिसार के प्रतिभागी शामिल हैं।

अलग-अलग क्षेत्रों के विशेषज्ञ देंगे व्याख्यान : पाठ्यक्रम संयोजिका डॉ. मंजू मेहता ने बताया कि कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों को प्रतिदिन अलग-अलग क्षेत्रों के विशेषज्ञ व्याख्यान देंगे। इनमें पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना, गुरु जंभेश्वर विज्ञान एवं तकनीकी विश्वविद्यालय हिसार, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली सहित कई नामी विश्वविद्यालयों व संस्थानों से विशेषज्ञ अपने व्याख्यान देंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........दैनिक सवेरा........

दिनांक 15..12..202..पृष्ठ संख्या....4........कॉलम....7-8.....

शिक्षक वर्ग के लिए प्रासंगिक होगा विस्तार प्रबंधन प्रशिक्षण : डा. एम.एस. सिद्धपुरिया

हिसार, (सोढी) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के निदेशक डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया ने कहा कि विस्तार प्रबंधन की नवीनतम तकनीकों व उनके उपयोग की जानकारी हासिल करने में यह प्रशिक्षण शिक्षक वर्ग के लिए बहुत ही लाभकारी होगा। वे निदेशालय में 'विस्तार प्रबंधन' विषय पर तीन सप्ताह के ऑनलाइन माध्यम से आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर बोल रहे थे। कार्यक्रम का आयोजन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह के दिशा-निर्देशों व मार्गदर्शन में वैज्ञानिक, शिक्षक व विस्तार विशेषज्ञों के लिए आयोजित किया जा रहा है ताकि यहां से विकसित नई-नई तकनीकों व जानकारियों को किसानों तक पहुंचाया जा सके। डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया ने कहा कि यहां से प्रशिक्षण हासिल कर वैज्ञानिक विश्वविद्यालय में विकसित नई-नई तकनीकों व विभिन्न फसलों की किस्मों की जानकारी को ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने में मदद करेंगे। उन्होंने प्रशिक्षण हासिल करने वाले प्रतिभागियों से इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया।

ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते डा. एम.एस. सिद्धपुरिया एवं उपस्थित प्रतिभागी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पंजाब केसरी.....

दिनांक 15.12.2020 पृष्ठ संख्या.....2.....कॉलम.....6-8.....

'शिक्षक वर्ग के लिए प्रासंगिक होगा विस्तार प्रबंधन प्रशिक्षण'

■ विस्तार प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

हिसार, 14 दिसम्बर (ब्यूरो): विस्तार प्रबंधन की नवीनतम तकनीकों व उनके उपयोग की जानकारी हासिल करने में यह प्रशिक्षण शिक्षक वर्ग के लिए बहुत ही लाभकारी होगा। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के निदेशक डा. एम.एस. सिद्धपुरिया ने कहे। वे निदेशालय में 'विस्तार प्रबंधन' विषय पर 3 सप्ताह के ऑनलाइन माध्यम से आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर बोल रहे थे। कार्यक्रम का आयोजन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह के दिशा-निर्देशों व मार्गदर्शन में वैज्ञानिक, शिक्षक व विस्तार विशेषज्ञों के लिए आयोजित किया जा रहा है, ताकि यहां से विकसित नई-नई तकनीकों व जानकारियों को किसानों तक पहुंचाया जा सके।

डा. एम.एस. सिद्धपुरिया ने कहा कि यहां से प्रशिक्षण हासिल कर वैज्ञानिक विश्वविद्यालय में विकसित नई-नई तकनीकों व विभिन्न फसलों की किस्मों की जानकारी को ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने में मदद करेंगे। उन्होंने प्रतिभागियों को निदेशालय के संगठनात्मक सैटअप से परिचित कराया और इसके 4 प्रकोष्ठों में से प्रत्येक के कार्यों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय की संयुक्त निदेशक व पाठ्यक्रम

ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते डा. एम.एस. सिद्धपुरिया एवं उपस्थित प्रतिभागी।

संयोजिका डा. मंजू मेहता ने बताया कि इस ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम में 32 वैज्ञानिक, शिक्षक व विस्तार विशेषज्ञ भाग ले रहे हैं। इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को विस्तार प्रबंधन की नवीनतम रुझानों व तकनीकों की जानकारी देते हुए उनके उपयोग, ज्ञान व कौशल के बारे में विस्तारपूर्वक बताना है। डा. मेहता ने बताया कि इस ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों को प्रतिदिन अलग-अलग क्षेत्रों के विशेषज्ञ व्याख्यान देंगे। इनमें पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना, गुरू जंभेश्वर विज्ञान एवं तकनीकी विश्वविद्यालय हिसार, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली सहित कई नामी विश्वविद्यालयों व संस्थानों से विशेषज्ञ अपने व्याख्यान देंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम...दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण...

दिनांक 15-12-2020 पृष्ठ संख्या 2, 4 कॉलम 7-8, 6

शिक्षक वर्ग के लिए विस्तार प्रबंधन प्रशिक्षण प्रासंगिक होगा : डॉ. एमएस

हिसार | एचएयू के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के निदेशक डॉ. एमएस सिद्धपुरिया ने कहा कि विस्तार प्रबंधन की नवीनतम तकनीकों व उनके उपयोग की जानकारी हासिल करने में यह प्रशिक्षण शिक्षक वर्ग के लिए बहुत लाभकारी होगा। वे निदेशालय में 'विस्तार प्रबंधन' विषय पर तीन सप्ताह के ऑनलाइन माध्यम से आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ पर बोल रहे थे।

कार्यक्रम का आयोजन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह के दिशा-निर्देशों व मार्गदर्शन में वैज्ञानिक, शिक्षक व विस्तार विशेषज्ञों के लिए आयोजित किया जा रहा है ताकि यहां से विकसित नई-नई तकनीकों व जानकारियों को किसानों तक पहुंचाया जा सके। डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया ने कहा कि यहां से प्रशिक्षण हासिल कर वैज्ञानिक विश्वविद्यालय में विकसित नई-नई तकनीकों व विभिन्न फसलों की किस्मों की जानकारी को ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने में मदद करेंगे। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय की संयुक्त निदेशक व पाठ्यक्रम संयोजिका डॉ. मंजू मेहता ने बताया कि इस ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम में 32 वैज्ञानिक, शिक्षक व विस्तार विशेषज्ञ भाग ले रहे हैं।

शिक्षकों के लिए प्रासंगिक होगा विस्तार प्रबंधन प्रशिक्षण

जासं, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) में विस्तार प्रबंधन विषय पर तीन सप्ताह के ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। जिसमें एचएयू के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के निदेशक डा. एमएस सिद्धपुरिया ने शिरकत की। कार्यक्रम का आयोजन विज्ञानियों, शिक्षक व विस्तार विशेषज्ञों के लिए आयोजित किया जा रहा है। ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम में 32 वैज्ञानिक, शिक्षक व विस्तार विशेषज्ञ भाग ले रहे हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम ....सिटी पल्स........

दिनांक 14.12.2020 पृष्ठ संख्या ....—.... कॉलम ....—....

विस्तार प्रबंधन की नवीनतम तकनीक शिक्षक वर्ग के लिए लाभकारी: डॉ. सिद्धपुरिया

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विस्तार प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

सिटी पल्स न्यूज़, हिसार। विस्तार प्रबंधन की नवीनतम तकनीकों व उनके उपयोग की जानकारी हासिल करने में यह प्रशिक्षण शिक्षक वर्ग के लिए बहुत ही लाभकारी होगा। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के निदेशक डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया ने कहे। वे निदेशालय में 'विस्तार प्रबंधन' विषय पर तीन सप्ताह के ऑनलाइन माध्यम से आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर बोल रहे थे।

डॉ. सिद्धपुरिया ने कहा कि यहां से प्रशिक्षण हासिल कर वैज्ञानिक विश्वविद्यालय में विकसित नई-नई तकनीकों व विभिन्न फसलों की किस्मों की जानकारी को ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने में मदद करेंगे। उन्होंने प्रशिक्षण हासिल करने वाले प्रतिभागियों से इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। उन्होंने प्रतिभागियों को निदेशालय के संगठनात्मक सेट-अप से परिचित कराया और इसके चार प्रकोष्ठों में से प्रत्येक के कार्यों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी।

हिसार। ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया एवं उपस्थित प्रतिभागी।

मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय की संयुक्त निदेशक व पाठ्यक्रम संयोजिका डॉ. मंजू महता ने बताया कि इस ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम में 32 वैज्ञानिक, शिक्षक व विस्तार विशेषज्ञ भाग ले रहे हैं। इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को विस्तार प्रबंधन की नवीनतम रूझानों व तकनीकों की जानकारी देते हुए उनके उपयोग, ज्ञान व कौशल के बारे में बताना है। डॉ. अंजु कुमारी ने बताया कि कोरोना महामारी के कारण इस तरह की गतिविधियों को व्यावहारिक रूप से आयोजित करने में बदलाव आया है जिसके चलते इसका ऑनलाइन माध्यम से आयोजन किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....अजीत समाचार.....

दिनांक 15.12.2020 पृष्ठ संख्या.....—.....कॉलम.....—.....

शिक्षक वर्ग के लिए प्रासंगिक होगा विस्तार प्रबंधन प्रशिक्षण : डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में विस्तार प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

हिसार/मंगाली नलवा, 14 दिसम्बर (राज पराशर/देवानंद सोनी): विस्तार प्रबंधन की नवीनतम तकनीकों व उनके उपयोग की जानकारी हासिल करने में यह प्रशिक्षण शिक्षक वर्ग के लिए बहुत ही लाभकारी होगा। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के निदेशक डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया ने कहे। वे निदेशालय में 'विस्तार प्रबंधन' विषय पर तीन सप्ताह के ऑनलाइन माध्यम से आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर बोल रहे थे। कार्यक्रम का आयोजन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह के दिशा-निर्देशों व मार्गदर्शन में वैज्ञानिक, शिक्षक व विस्तार विशेषज्ञों के लिए आयोजित किया जा रहा है ताकि यहां से विकसित नई-नई तकनीकों व जानकारियों को किसानों तक पहुंचाया जा सके। डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया ने कहा कि यहां से प्रशिक्षण हासिल कर वैज्ञानिक विश्वविद्यालय में विकसित नई-नई तकनीकों व विभिन्न फसलों की किस्मों की जानकारी को ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने में मदद करेंगे। उन्होंने प्रशिक्षण हासिल करने वाले प्रतिभागियों से इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। उन्होंने प्रतिभागियों को निदेशालय के संगठनात्मक सेट-अप से परिचित कराया और इसके चार प्रकोष्ठों में से प्रत्येक के कार्यों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने सभी प्रतिभागियों से सफलतापूर्वक, पूरी लगन और मेहनत से इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को पूरा करने का आह्वान किया। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय की संयुक्त निदेशक व पाठ्यक्रम संयोजिका डॉ. मंजू मेहता ने बताया कि इस ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम में 32 वैज्ञानिक, शिक्षक व विस्तार विशेषज्ञ भाग ले रहे हैं जिनमें चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व इसके बाहरी केंद्रों, हैदराबाद व लाला लाजपत राय पशु एवं चिकित्सा महाविद्यालय हिसार के प्रतिभागी शामिल हैं। इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को विस्तार प्रबंधन की नवीनतम रूझानों व तकनीकों की जानकारी देते हुए उनके उपयोग, ज्ञान व कौशल के बारे में विस्तारपूर्वक बताना है। डॉ. अंजु कुमारी ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए मंच का संचालन किया। उन्होंने बताया कि कोरोना महामारी के कारण इस तरह की गतिविधियों को व्यावहारिक रूप से आयोजित करने में बदलाव आया है जिसके चलते इसका ऑनलाइन माध्यम से आयोजन किया गया।

अलग-अलग क्षेत्रों के विशेषज्ञ देंगे व्याख्यान : पाठ्यक्रम संयोजिका डॉ. मंजू मेहता ने बताया कि इस ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों को प्रतिदिन अलग-अलग क्षेत्रों के विशेषज्ञ व्याख्यान देंगे। इनमें पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना, गुरू जंभेश्वर विज्ञान एवं तकनीकी विश्वविद्यालय हिसार, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली सहित कई नामी विश्वविद्यालयों व संस्थानों से विशेषज्ञ अपने व्याख्यान देंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पल पल.....

दिनांक 14.12.2020 पृष्ठ संख्या.....—.....कॉलम.....—

सार समाचार

कृषि विश्वविद्यालय में विस्तार प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

पल पल न्यूज: हिसार, 14 दिसंबर। विस्तार प्रबंधन की नवीनतम तकनीकों व उनके उपयोग की जानकारी हासिल करने में यह प्रशिक्षण शिक्षक वर्ग के लिए बहुत ही लाभकारी होगा। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के निदेशक डॉ. एमएस सिद्धपुरिया ने कहे। वे निदेशालय में 'विस्तार प्रबंधन' विषय पर तीन सप्ताह के ऑनलाइन माध्यम से आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर बोल रहे थे। कार्यक्रम का आयोजन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह के दिशा-निर्देशों व मार्गदर्शन में वैज्ञानिक, शिक्षक व विस्तार विशेषज्ञों के लिए आयोजित किया जा रहा है ताकि यहां से विकसित नई-नई तकनीकों व जानकारियों को किसानों तक पहुंचाया जा सके। डॉ. एमएस सिद्धपुरिया ने कहा कि यहां से प्रशिक्षण हासिल कर वैज्ञानिक विश्वविद्यालय में विकसित नई-नई तकनीकों व विभिन्न फसलों की किस्मों की जानकारी को ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने में मदद करेंगे। उन्होंने प्रशिक्षण हासिल करने वाले प्रतिभागियों से इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। उन्होंने प्रतिभागियों को निदेशालय के संगठनात्मक सेट-अप से परिचित कराया और इसके चार प्रकोष्ठों में से प्रत्येक के कार्यों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने सभी प्रतिभागियों से सफलतापूर्वक, पूरी लगन और मेहनत से इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को पूरा करने का आह्वान किया। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय की संयुक्त निदेशक व पाठ्यक्रम संयोजिका डॉ. मंजू मेहता ने बताया कि इस ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम में 32 वैज्ञानिक, शिक्षक व विस्तार विशेषज्ञ भाग ले रहे हैं जिनमें चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व इसके बाहरी केंद्रों, हैदराबाद व लाला लाजपत राय पशु एवं चिकित्सा महाविद्यालय हिसार के प्रतिभागी शामिल हैं। इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को विस्तार प्रबंधन की नवीनतम रूझानों व तकनीकों की जानकारी देते हुए उनके उपयोग, ज्ञान व कौशल के बारे में विस्तारपूर्वक बताना है। डॉ. अंजु कुमारी ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए मंच का संचालन किया। उन्होंने बताया कि कोरोना महामारी के कारण इस तरह की गतिविधियों को व्यावहारिक रूप से आयोजित करने में बदलाव आया है जिसके चलते इसका ऑनलाइन माध्यम से आयोजन किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पाठकपक्ष.....

दिनांक 14.12.2020.....पृष्ठ संख्या.....—.....कॉलम.....—.....

शिक्षक वर्ग के लिए प्रासंगिक होगा विस्तार प्रबंधन प्रशिक्षण : डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 14 दिसम्बर : विस्तार प्रबंधन की नवीनतम तकनीकों व उनके उपयोग की जानकारी हासिल करने में यह प्रशिक्षण शिक्षक वर्ग के लिए बहुत ही लाभकारी होगा। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के निदेशक डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया ने कहे। वे निदेशालय में 'विस्तार प्रबंधन' विषय पर तीन सप्ताह के ऑनलाइन माध्यम से आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर बोल रहे थे। कार्यक्रम का आयोजन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह के दिशा-निर्देशों व मार्गदर्शन में वैज्ञानिक, शिक्षक व विस्तार विशेषज्ञों के लिए आयोजित किया जा रहा है ताकि यहां से विकसित नई-नई तकनीकों व जानकारियों को किसानों तक पहुंचाया जा सके। डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया ने कहा कि यहां से प्रशिक्षण हासिल कर वैज्ञानिक विश्वविद्यालय में विकसित नई-नई तकनीकों व विभिन्न फसलों की किस्मों की जानकारी को ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने में मदद करेंगे। उन्होंने प्रशिक्षण हासिल करने वाले प्रतिभागियों से इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। उन्होंने प्रतिभागियों को निदेशालय के संगठनात्मक सेट-अप से परिचित कराया और इसके चार प्रकोष्ठों में से प्रत्येक के कार्यों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने सभी प्रतिभागियों से सफलतापूर्वक, पूरी लगन और मेहनत से इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को पूरा करने का आह्वान किया। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय की संयुक्त निदेशक व पाठ्यक्रम संयोजिका डॉ. मंजू मेहता ने बताया कि इस ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम में 32 वैज्ञानिक, शिक्षक व विस्तार विशेषज्ञ भाग ले रहे हैं जिनमें चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व इसके बाहरी केंद्रों, हैदराबाद व लाला लाजपत राय पशु एवं चिकित्सा महाविद्यालय हिसार के प्रतिभागी शामिल हैं। इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को विस्तार प्रबंधन की नवीनतम रूझानों व तकनीकों की जानकारी देते हुए उनके उपयोग, ज्ञान व कौशल के बारे में विस्तारपूर्वक बताना है। डॉ. अंजु कुमारी ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए मंच का संचालन किया। उन्होंने बताया कि कोरोना महामारी के कारण इस तरह की गतिविधियों को व्यावहारिक रूप से आयोजित करने में बदलाव आया है जिसके चलते इसका ऑनलाइन माध्यम से आयोजन किया गया। पाठ्यक्रम संयोजिका डॉ. मंजू मेहता ने बताया कि इस ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षणार्थियों को प्रतिदिन अलग-अलग क्षेत्रों के विशेषज्ञ व्याख्यान देंगे। इनमें पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना, गुरू जंभेश्वर विज्ञान एवं तकनीकी विश्वविद्यालय हिसार, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली सहित कई नामी विश्वविद्यालयों व संस्थानों से विशेषज्ञ अपने व्याख्यान देंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....समस्त हरियाणा.....

दिनांक 14.12.2020.....पृष्ठ संख्या.....1.....कॉलम.....1.....

शिक्षक वर्ग के लिए प्रासंगिक होगा विस्तार प्रबंधन प्रशिक्षण : डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। विस्तार प्रबंधन की नवीनतम तकनीकों व उनके उपयोग की जानकारी हासिल करने में यह प्रशिक्षण शिक्षक वर्ग के लिए बहुत ही लाभकारी होगा। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के निदेशक डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया ने कहे। वे निदेशालय में 'विस्तार प्रबंधन' विषय पर तीन सप्ताह के ऑनलाइन माध्यम से आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर बोल रहे थे। कार्यक्रम का आयोजन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह के दिशा-निर्देशों व मार्गदर्शन में वैज्ञानिक, शिक्षक व विस्तार विशेषज्ञों के लिए आयोजित किया जा रहा है ताकि यहां से विकसित नई-नई तकनीकों व जानकारियों को किसानों तक पहुंचाया जा सके। डॉ. एम.एस. सिद्धपुरिया ने कहा कि यहां से प्रशिक्षण हासिल कर वैज्ञानिक विश्वविद्यालय में विकसित नई-नई तकनीकों व विभिन्न फसलों की किस्मों की जानकारी को ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने में मदद करेंगे। उन्होंने प्रशिक्षण हासिल करने वाले प्रतिभागियों से इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। उन्होंने प्रतिभागियों को निदेशालय के संगठनात्मक सेट-अप से परिचित कराया और इसके चार प्रकोष्ठों में से प्रत्येक के कार्यों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम........नभ छोर........

दिनांक 14.12.2020...पृष्ठ संख्या....—....कॉलम....—....

प्रशिक्षण में बताई विस्तार प्रबंधन की नवीनतम तकनीकें

हिसार/14 दिसंबर/रिपोर्टर

विस्तार प्रबंधन की नवीनतम तकनीकों व उनके उपयोग की जानकारी हासिल करने में यह प्रशिक्षण शिक्षक वर्ग के लिए बहुत ही लाभकारी होगा। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय के निदेशक डॉ. एमएस सिद्धपुरिया ने कहे। वे निदेशालय में 'विस्तार प्रबंधन' विषय पर तीन सप्ताह के ऑनलाईन माध्यम से आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि यहां से प्रशिक्षण हासिल कर वैज्ञानिक विश्वविद्यालय में विकसित नई-नई तकनीकों व विभिन्न फसलों की किस्मों की जानकारी को ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने में मदद करेंगे। उन्होंने प्रशिक्षण हासिल करने वाले प्रतिभागियों से इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। उन्होंने प्रतिभागियों को निदेशालय के संगठनात्मक सेट-अप से परिचित कराया और इसके चार प्रकोष्ठों में से प्रत्येक के कार्यों के बारे में जानकारी दी। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय की संयुक्त निदेशक व पाठ्यक्रम संयोजिका डॉ. मंजू मेहता ने बताया कि इस ऑनलाईन प्रशिक्षण कार्यक्रम में 32 वैज्ञानिक, शिक्षक व विस्तार विशेषज्ञ भाग ले रहे हैं। इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को विस्तार प्रबंधन के नवीनतम रूझानों व तकनीकों की जानकारी देते हुए उनके उपयोग, ज्ञान व कौशल के बारे में बताना है। डॉ. अंजु कुमारी ने बताया कि कोरोना महामारी के कारण इस तरह की गतिविधियों को व्यावहारिक रूप से आयोजित करने में बदलाव आया है जिसके चलते इसका ऑनलाईन माध्यम से आयोजन किया गया।